वैश्विक परिदृश्य में आयुर्वेद की बढ़ती लोकप्रियता को नई ऊँचाइयों तक पहुँचाने के लिए शोध जरूरी-प्रो. ए. के. सिंह

दैनिक मान्यवर

वाराणसी।आयुर्वेद संकाय चिकित्सा विज्ञान संस्थान बीएचयू व इंस्टीट्यूट ऑफ एप्लाइड स्टैटिस्टिक्स कानपुर के संयुक्त तत्वाधान में रिसर्च मेथडोलॉजी व जैव सांख्यिकी विषय पर दो दिनी कार्यशाला का आयोजन धन्वंतरि भवन काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में किया गया। भगवान धन्वंतरि एवंमहामना पंडित मदन मोहन मालवीय के माल्यार्पण एवं दीप प्रज्ज्वलन के साथ कार्यशाला का शुभारंभ हुआ।विशिष्ट अतिथि राजकीय आयुर्वेदिक कॉलेज, हांडिया प्रयागराज के पूर्व प्राचार्य प्रो जीएस तोमर ने बताया कि यह पहला नोडल सेन्टर आयुर्वेद संकाय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में स्थापित किया जा रहा है। उसमें भी प्रशिक्षुओं की संख्या शुभांक108 है। शोध एविडेन्स बेस होने पर विश्व में स्वीकारिता होती है, यदि आयुर्वेद की चारों प्रमाणों की मानकीकरण करके शोध परक कार्य किया जाय तो विश्व में आयुर्वेद का परचम लहराया जा सकता है। आज आयुर्वेद भारत की चारदीवारी तक ही सीमित न रहकर वैश्विक स्वीकार्यता की ओर बढ़ रहा है ।अतः हमें अपने प्रभावी एवं शाश्वत ज्ञान को उनकी भाषा में समझाने के लिए वर्तमान में प्रचलित वैज्ञानिक मापदंडों पर शोध के द्वारा सिद्ध करना

होगा तभी यह लोक स्वीकार्यता प्राप्त कर सकेगा । मुझे विश्वास है कि आयुर्वेद ही भारत को पुनः विश्व गुरू बनाने का कार्य करेगा ।

जी एस वी एम मेडिकल कॉलेज कानपुर की प्रो सीमा द्विवेदी ने बताया कि अच्छे शोध के द्वारा ही आयुर्वेद को चिकित्सा के क्षेत्र में शीर्ष पर पहुंचाया जा सकता है। उन्होंने आगे कहा कि एमडी व पीएचडी के छात्रों को आयुर्वेद की शोध परक आवश्यकता को सिखाया जाने के उद्देश्य से सांख्यिकी गणना के अनुसार आयुर्वेद को स्थापित किये जाने का उत्तर प्रदेश में यह पहला प्रयास है। इसके माध्यम से आयुर्वेद के अन्य महाविद्यालयों में शुरूआत की जाएगी।कानपुर से सांख्यिकी निदेशक डॉ शुभम पाण्डेय ने बताया कि बीस हजार से ज्यादा मेडिकल प्रोफेसनल को वर्कशाप के माध्यम से प्रशिक्षण दिया जा चुका है। आयुर्वेद के क्षेत्र में उत्तर प्रदेश में यह पहला प्रशिक्षण केन्द्र है जो छात्रों के थिसिस पेपर शोध को क्वालिटी बढ़ाये जाने के लिए अत्यधिक लोकप्रिय रहेगा। इस प्रशिक्षण के माध्यम से यदि छात्र शोध परक कार्य करेंगे तो विश्व में स्वीकारिता आसानी से हो पायेगी।प्रो एसके सिंह, निदेशक चिकित्सा विज्ञान संस्थान ने बताया की आयुर्वेद को माडर्न मेडिसीन के साथ इन्टीग्रेट करके शोध परक कार्य विश्व के मानकों पर कार्य करने की वर्तमान में आवश्यकता है। आयुर्वेद व आधुनिक चिकित्सा के चिकित्सकीय विधि व चिकित्सा दोनों के मध्य सांख्यिकीय गणना के द्वारा पुल बनाकर जोड़कर एक महत्वपूर्ण कार्य नई दिशा के साथ चिकित्सा व्यवस्था में सुदृढ़ता प्रदान किया जा सकता हैं। इस दिशा में हम सभी लोग प्रयासरत हैं।काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के कुलगुरु प्रो. वी. के शुक्ल ने बताया कि नोडल केन्द्र बनाया गया, यह पहला केन्द्र विश्व में नई कीर्तिमान स्थापित कर सकता है। उन्होंने आगे कहा कि आज आयुर्वेद में संकाय में इसकी शुरूआत हो रही है। इसका मुख्य कारण कोविड 19 में आयुर्वेदिक औषधियों की महत्वपूर्ण उपयोगिता रही है। इसको एविडेंस बेस बनाने के लिए अच्छा समय चल रहा है। वर्तमान समय में आयुर्वेद का क्षेत्र अत्यधिक शोध की सम्भावनायें हैं। जिसके द्वारा छात्र जल्द ही सफलता को प्राप्त कर सकता है। आयुर्वेद चिकित्सा अत्यधिक जनोपयोगी है कैंसर जैसी बड़ी बिमारी में भी आयुर्वेद चिकित्सा के द्वारा शोध परक कार्य करके लाभ दिया जा सकता है। इसमें डेटा जेनरेसन, कलेक्सन, सैम्पल साइज और एनालिसिस करके मानकों के अनुरूप स्थापित किया जा सकता है। यदि इस प्रकार से कार्य वैज्ञानिक रूप से किया जाय तो आयुर्वेद आधुनिक चिकित्सा को पीछे भी कर सकने की क्षमता है।संकाय प्रमुख, आयुर्वेद संकाय प्रो केएन द्विवेदी, ने सभी को धन्यवाद देते हुए बताया कि महर्षि चरक प्रोग्राम सांख्यिकीय की नोडल बनाने का सौभाग्य आयुर्वेद संकाय को मिला यह अत्यन्त हर्ष का विषय है। भविष्य में शोध के क्षेत्र में यह मिल का पत्थर साबित होगा किसी भी नये एकैडमिक कार्य की शुरूआत संकाय के लिए गौरव की बात होती है। यह प्रशिक्षण अन्तिम प्रशिक्षण नहीं है।